भगत कबीर – सबद २४

जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२७

जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥
अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥
मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥
मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥
सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥
कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥
गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥

सार: मानवता का सबसे बड़ा डर अकसर मौत के बारे में मूलभूत ग़लत समझ से पैदा होता है। यह अहं ही है जो नियंत्रण खोने से डरता है, स्वयं को शरीर से जोड़ कर, स्थायित्व के भ्रम से चिपका रहता है। लेकिन वास्तविक समझ यह बताती है कि मौत शरीर का अंत नहीं बल्कि स्वयं अहं का स्वाभाविक रूप से समाप्त होना है। जब यह बदलाव आता है तब अहं मिट जाता है, मौत का विचार अब हमारे मन पर हावी नहीं रहता और न ही उसका अस्तित्व से जुड़ा वह भारीपन रहता है क्योंकि डर पैदा करने वाला गर्व और भ्रम समाप्त हो चुके होते हैं। मौत, डर का कारण बनने के बजाय, स्पष्टता, गहन समझ, मुक्ति और स्थायी शांति का द्वार बन जाती है जिससे हम डर से ऊपर उठकर वास्तविक स्वतंत्रता अनुभव कर सकते हैं।

जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥

जिस मौत से पूरा संसार डरता है। यह अहं के मूल भय को दिखाता है जो अपनी पहचान, नियंत्रण और निरंतरता के भ्रम का खो जाना है जो क्षणभंगुर को स्थायी मान लेने से पैदा होता है।

सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥

ज्ञान की समझ से उस डरावनी मौत का सच सामने आता है। इससे स्पष्ट होता है कि मरने वाला शरीर नहीं बल्कि लगाव, डर, घमंड और अलगाव पर निर्मित झूठी पहचान है, इस प्रकार मृत्यु कोई विनाशकारी घटना नहीं बल्कि आंतरिक रूपांतरण है। (१)

अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥

अब मैं कैसे मरूँ जबकि मेरे मन ने भीतर ही मृत्यु को स्वीकार कर लिया है। यह गहरे विरोधाभास की ओर संकेत करता है, जब मनुष्य सार्वभौमिक अस्तित्व से अलग, स्वतंत्र स्वयं की झूठी धारणा को स्वेच्छा से छोड़ देता है तब उसे आंतरिक मुक्ति मिलती है।

मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥

जो लोग अपने भीतर मौजूद सर्वव्यापी सत्ता को नहीं पहचानते, वह बार-बार मरते रहते हैं। यह भटके हुए मन की सच्चाई है जो जीवन के असली सार को समझ नहीं पाता है और बार-बार अलगाव की ओर लौट जाता है। (१)(विराम)

मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥

हर कोई बार-बार मरने और मौत की बात करता है। यह नश्वरता के बारे में एक सतही सोच को दिखाता है जहाँ इसका वास्तविक अर्थ, यानी झूठी पहचान का अंत होना, दिखाई नहीं देता।

सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥

जो व्यक्ति सहज रूप से आंतरिक मृत्यु से गुज़रता है, वह अमर हो जाता है। यह अमरता के उस विरोधाभास की ओर इशारा करता है जिसमें जीवित रहते हुए ही झूठी पहचान को मिटाना होता है ताकि वह जागरूकता बनी रहे जिसे मौत भी विचलित न कर सके। (२)

कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥

कबीर कहते हैं कि मन आनंद से भर गया है। इससे पता चलता है कि अहं की मृत्यु से ही असली जीवन मिलता है जिसमें मोह-माया से मुक्ति के कारण आनंद का उदय होता है।

गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥

जैसे ही आंतरिक भ्रम मिटा, केवल 'परमानंद', यानी परम आनंद ही शेष रह गया। यह ज़ोर देता है कि ग़लत धारणाओं, द्वैत और असुरक्षा की भावनाओं को छोड़ने से ही हमारी अंतरात्मा को सच्चा आनंद मिलता है। (३)(२०)

तत्त्व: भगत कबीर ऐसी अवस्था का वर्णन करते हैं जिसमें ग़लत धारणाएँ, असुरक्षा से पैदा होने वाले डर और अलगाव का भ्रम, सब मिट जाते हैं। यह परम आनंद लगातार कोशिशों का फल नहीं है, बल्कि यह हमारे वास्तविक, अखंड स्वरूप के बोध से सहज ही प्रकट होता है जिसे अहं ने लंबे समय से सीमित कर रखा था। इस गहन मुक्ति में, खुशी शांतिपूर्ण अवस्था के रूप में खिलती है और उस स्वाभाविक बोध के रूप में प्रकट होती है जो हम सभी के भीतर मूलतः विद्यमान है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com